हिन्दी Hindi Class 11 Important Question Chapter 12 संध्या के बाद

1. "संध्या के बाद" काव्य के रचयिता का नाम लिखो।

उत्तर: इस काव्य के रचयिता प्रकृति के सुकुमार सुमित्रानंदन पंत है।

2. कवि के अनुसार संध्या के समय पत्ते तथा गंगा का रंग कैसा दिखता है?

उत्तर: संध्या के समय में पेड़ों के पत्ते का रंग ताँबे के बर्तनों की तरह और गंगा का पानी का रंग चितकबरा जैसा हो जाता है।

3. कवि ने वृद्ध औरतों और नदी के बीच कैसा भाव प्रकट किया है?

उत्तर: कवि यह कहते हैं कि नदी के पास खड़ी सफेद साड़ी में औरतें मानो ऐसे प्रतीत होती हैं जैसे कि नदी में सफेद बगुला शिकार करने के लिए एकचित होकर खड़ा होता है।

4. सुमित्रानंदन पंत कविता में कैसे समाज की कल्पना करते हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत "संध्या" कविता में ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जहां पर मनुष्य को उसके कर्मों अथवा गुणों के आधार पर बाटा जाए तथा उन्हें वेतन भी उनके कर्मों तथा क्षमता के अनुसार दिया जाए।

5. कवि ने नदी के तट पर बैठे वृद्ध औरतों की तुलना किससे की है?

उत्तर: कवि ने नदी के तट पर बैठी ध्यान में लीन सफेद वस्त्र धारित वृद्ध औरतों की तुलना नदी में शिकार के लिए एकचित बैठें सफेद बगुले से की है।

6. संध्या के समय किस की आवाज सुनाई देती है?

उत्तर: संध्या के समय में जब सूर्यास्त होता है तब मंदिरों में हो रही पूजा की घंटियां, शंख तथा चिड़ियों के चहचहाने की मीठी आवाज सुनाई देती है।

7. दीप शिखा-सा ज्वलित कलश

नभ में उठकर करता नीराजनां। उपरोक्त पंक्तियों के भावार्थ लिखो।

उत्तर: कवि कहता है कि संध्या के सूर्य की किरणों के कारण मंदिर के ऊपर रखा कलश दीपक के जैसा प्रतीत होता है और यह इतना मनोरम दृश्य है कि जैसे वह कलश भी संध्या समय की आरती में लोगों का साथ दे रहा हो।

8. क्षीण ज्योति न चुपके ज्यों

गोपन मन को दे दी हो भाषा।

https://www.evidyarthi.in/

उपरोक्त पंक्तियों के भावार्थ लिखो।

उत्तर: लोगों के घरों में दीपक प्रज्वलित हो उठे हैं। इस रात के अंधकार में उसकी रोशनी अवश्य कमज़ोर हो गई है। वह कमज़ोर ज्योति बहुत से लोगों के मन छिपी गुप्त बातों का प्रतीत होता है।

9. बिना आये के कलंकित बन रही

सके जीवन की परिभाषा।

उपरोक्त पंक्तियों के भावार्थ लिखो।

उत्तर: गाँव के लोगों के पास आय का साधन नहीं है तथा उसके जीवन में बहुत दुख हैं। ऐसा लगता है कि जैसे यह गरीबी व दुख उसकी कहानी बनकर ही रह जाएँगे।

10. व्यक्ति नहीं, जग की परिपाटी

दोषी जन के दुख कलेश की।

उपरोक्त पंक्तियों के भावार्थ लिखो।

उत्तर: समस्याओं से भरी हुई समाज की व्यवस्था ही मनुष्य के दुख का असली कारण है। धन के असमान बँटवारे के कारण ही समाज में लोगों के बीच में अंतर व्याप्त है।

11. ताम्रपर्ण, पीपल से, शतमुख

झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर!

उपरोक्त पंक्तियों के भावार्थ लिखो।

उत्तर: पीपल के सूखे-सूखे पत्ते ताँबे की धातु के जैसे प्रतीत हो रहे हैं। पेड़ से गिरते हुए पत्ते ऐसे लग रहे हैं जैसे सैंकड़ों मुँह वाले झरने से सुनहरे रंग की जल धाराएँ गिर रही हों।

12. संध्या के समय प्राकृतिक दृश्य कैसा होता है?

उत्तर: संध्या के समय पाकृतिक दृश्य कुछ इस प्रकार होता है -:

- सूर्य की किरणों से पत्ते तांबे जैसे प्रतीत होते है।
- गंगा का जल चितकबरा जैसा दिखाई देता है।
- मंदिरों में आरती तथा घंटियों की आवाज सुनाई देती है।
- झरना स्वर्णिम रूप में बहता है।
- मंदिर के ऊपर रखा कलश भी दीपक की तरह दिखता है।

13. कविता के आधार पर पंत जी के द्वारा किये गए नदी के तट के दृश्य का वर्णन कीजिये।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर: संध्या के समय नदी का पानी चितकबरा हो जाता है। वहां पर ध्यान में लीन वृद्ध महिलाएं सफेद साड़ी में ऐसे प्रतीत होती है जैसे कि नदी में कोई बगुला शिकार करने के लिए बैठा हो। नदी के धीमे प्रवाह को औरतों के दुख के समान बताया है। वृद्ध औरतों व बगुलों को सुंदर उपमा देकर पंत जी ने कविता को सुंदर बनाया है।

14. कर्म और गुण के समान ही

सकल आय-व्यय का हो वितरण?

उपरोक्त पक्तियों का भावार्थ लिखो।

उत्तर: इस पंक्ति में कवि ऐसे समाज की कल्पना कर रहा है, जहाँ आय-व्यय का वितरण मनुष्य के कर्म और गुणों के आधार पर होना चाहिए। ऐसे में प्रत्येक मनुष्य को उसके गुणों और कार्य करने की क्षमता के आधार पर कार्य मिलेगा, इससे आय का सही प्रकार से बँटवारा हो सकेगा। ये समाजवाद के गुण हैं, जिसमें किसी एक वर्ग का आय-व्यय पर अधिकार नहीं होता है। सबको समान अधिकार प्राप्त होते हैं।

15. लाला के मन मे क्या-क्या दुविधाएँ उठती है?

उत्तर: लाला के मन मे निम्न दुविधाएँ उठती है -:

- लाला यह सोचता है कि वह स्वयं ही इस दुख, गरीबी और उत्पीड़न को झेल रहा है।
- उसे सुख प्राप्त क्यों नहीं हो रहा है?
- वह अपने नाते-रिश्तेदारों तथा घरवालों को साफ़-सुथरा घर क्यों नहीं दे पाता?
- वह शहर के अमीर बनियों के समान क्यों नहीं बन पाता?
- वह शहर के महाजनों जैसा क्यों नहीं बन पाता?
- उसकी तरक्की के मार्ग किसके द्वारा रोक दिए गए हैं?
- वह सोचता है कि कुछ ऐसा नहीं हो सकता है, जिससे उसे भी उन्नति तथा तरक्की करने के मौका मिले।

16. कवि ने सामाजिक समानता की कैसी कल्पना की है?

उत्तर: सामाजिक समानता की छवि की कल्पना इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है-

- कर्म तथा गुण के समान ही सभी को आय-व्यय का वितरण होना चाहिए।
- सामूहिक जीवन का निर्माण किया जाना चाहिए।
- सब लोग मिलकर एक नए संसार का निर्माण करें।
- सब लोगों को मिलकर सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं का मिल बाँटकर भोग करना चाहिए।
- समाज को धन का उत्तराधिकारी बनाया जाए।
- सभी लोग वस्त्र, भोजन तथा आवास के अधिकारी हों।
- श्रम सबमें समान रूप से बँटें।

https://www.evidyarthi.in/